''राग और वाद्य''

*डॉ. किशनी फुलवानी

मनुष्य अपने जाति स्वभाव के कारण शायर है और राग उसमें समाया हुआ हैं।

राग शब्द का अर्थ है– ''मौज या रूह का रेला''। राग निहायत हृदय को पिघलाने वाली चीज और उसमे जादू जैसा प्रभाव है। इसलिए न सिर्फ इन्सान परन्तु प्रकृति के दूसरे जीवों को भी मोहित कर देता है। श्रीकृष्ण की मूरली सभी पशु–पक्षियों और इन्सानो को मोहित कर देती थीं सॉप भी मुरजी की आवाज पर नृत्य करने लगता है। ''सोरठ राव खंगर'' प्रमाख्यान में बीजल चारण की साज की आवाज पर राव–खंगार अपना सिर उसे समर्पित कर देते हैं। ऐसा जादूई संगीत सिंध और सर्वप्रथम पंजाब में प्रारंभ हुआ। आज भी भी कहा जाता है कि ''राग पंजाब में जन्मा और थार में (थार रेगिस्तान) में मरा''।

मैंने अपने पिताश्री से पूछा था–बाबा ये थार में राग का मरना कैस? पिताश्री ने गले में से आवाज निकाल कर बताया कि थरी लोग ऐसे गाते हैं जैसे कोइ मर गया हैं। थरी लोगों को राग की सुध नही होती है। **1.**

प्राचीन आर्यो में से कितने ही लोग सिंधु नदी के किनारे रहते थे और उस मोहक वातावरण में बहुत ही सुरीली आवाज में मंत्रो का उच्चारण करते थें। वेदों की ऋचाएॅ स्वयं साबित करती हैं कि उनमें राग की कितनी न जानकारी थी। प्राचीन आर्यो को ध्यान प्रकृति को जानने में लगा रहता था। उसमें उनकों हमेशा अनहद का आलाप सुनाई देता था जिसकी गूंज उन्होनें उपनिषदों में भरी थी। **2.**

अठई पहिर बजे थी, मूरली मोहन जी,

बुधी बिन कननि सां, सामी की न रजे। **3.**

कवि सामी कहते हैं कि मुझे तो आठों ही पहर मोहन की मुरली ही सुनाई देती है

प्राचीन हिन्दुओं ने राग में आश्चर्यजनक प्रगति की थी। हिन्दु लोग वर्ष में छः ऋतुओं को मानते हैं। प्रत्येक ऋतु या मौसम के लिए उन्होंने विशष राग की रचना की थी। उन छः रागों को तमसीली तरह देवता माना है।

प्रत्येक देवता की लिए उन्होंने पॉच भारियाएॅ पत्नी और आठ पुत्र माने हैं। उनकी पत्नियों के नाम रागिनी रखे हैं। राग और रागनियों का वर्गीकरण करके प्रत्येक का मनमोहक वर्णन किया है। जैसे भैरव को शिव की तरह तीन ऑखो वाला ललाट पर चन्द्रमा प्राकशमान, जठाओं में गंगा प्रवाहित हो रही है। सिर पर वासीगं सॉप लिपटा हुआ और गर्दन में मुण्डो की माला पहनी हुई है।

1. भारत के सिन्धी प्रेय प्रेमाख्यान – डां. किशनी फुलवानी 2003 अजमेर।
2. Cambridge History of India 1103

3. कदीम सिंन्ध प्रो0 महर चन्द आडवानी, राष्टीय सिन्धी भाषा विकास परिषद नई दिल्ली देवनागरी एडिशन 2017

हिन्डोल – हिन्डोल राग सोने के झूले में झूल रहा है और उसके चारों ओर कितनी ही अप्सराऍं खड़ी हैं जो उनको झूला झूला रही हैं और गा भी रही हैं।

3. मेघ – मेघ का अर्थ है बादल और उसमें से मीहूं शब्द बना है। मेध का वर्ण काला है। उसे पीली पोशाक पहिनी हुई है। हाथ में तेल और चमकदार तलवार है। बादल पर सवारी करता है। ऐसा माना जाता ळै कि मेध राग का पूण्र विधि से गाया जाये तो उसी समय मेघ बरसने लगते हैं।

4. श्रीराग – श्रीराग को एक खुबसूरत जवान तबायो है जो सफेद पोशाक पहने हुए हैं। उसके गले में लाल मोती और बिल्लोरों की कंठी पहनी हुई है और हाथ में कमल के फूलों का गुच्छा है।

5. दीपक – दीपक शब्द में से दिया शब्द बना है, दीपक राग को अग्नि जैसे वस्त्र पहने हुए हैं। ललाट में से आग की लपटें निकल रही है। वह मस्त हाथी पर सवार है। कहा जाता है कि दीपक तें तेल और बाती डालकर यदि पूर्ण विधि के साथ दीपक राग गाएं तो दीपक अपने आप जल उठता है। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि यदि कोई पूर्ण विधि से दीपक राग गाए तो आग की लपटें उसमें से निकलकर पूरी तरह उसको भस्म कर सकती है।

6. राग मालकोस – राग मालकोस की कल्पना एक हष्ट–पुष्ट जवान के रूप में की गई है। उसके मुख में से खून टपकता रहता है। ऑखे नशे में लाल रहती है और हाथ में एक लाठी है। उसकी पोशाक नीले रंग की है और गले में मोतियों की माला पहनी हुई है।

प्राचीन नूनानियों ने इस तरह रागों का वर्णन किया है। हॉ, यह सही है कि प्रत्येक देश और जाति के गाने का तरीका अपना–अपना अलग होता है।

अंग्रेजी राग में से किसी को आन्नद आता है तो किसी के नहीं इसी तरह हिन्दुस्तानी राग भी किसी के पसन्द आता है किसी के नहीं हॉ, यह सही है कि प्रत्येक जाति को अपना राग अच्छा लगता है। विश्व में प्रत्येक देश और जाति में संगीत मं बड़े–बड़े उस्ताद हुए हैं। हिन्दुस्ताान में संगीत सम्राट तानसेन का बड़ा नाम है।

वाद्यः– पंजाब और सिन्ध के रहवासी वाद्य बजाने में माहिर थे। वाद्य के साथ सैमन गाते थे। जो प्रकृति से प्रेम के गीत हैं। कुछ लोग गाथा गाते थे। सिंध में भगत लोग रहते हैं जो पूरी–पूरी रात भगत करते हैं। भगत में कथा, नृत्य संगीत और किस्सों का समावेश होता है। भगत में एक व्यक्ति गाता है दूसरी पंक्ति दूसरे गायक गाते हैं। ऋग्वेद मंडल पहला, 1,90 और मंडल आठ – 92, 219 कई ऋषियों को राजाओं की ओर से दान मिलता था। वें ऋषि उनकी साख में ''दान स्तुति'' गाते थे। जिसे Panegryic Poetry कहा जाता था। सोम रस को जब निचोड़ा जाता था तो सात औरतें सोमरस की महत्ता पर गीत गाती थी (मंडल 9,66) भारतीय समाज में सात सुहागिनों का बहुत महत्व है। कोई भी शुभ कार्य चाहे बच्चे के जन्म उत्सव का या समाज में शुभ कार्य का कोई काम हो, उनके बिना अधूरा माना जाता है। ऋगवेद में कुछ ऋचाओं में युद्धों का भी वर्णन मिलता है जिसे Epic Poetry कह सकते है। कुछ में विवाह सम्बंधी बातों का तो किसी में अन्य विषयों का समावेश है। इस समय का काव्य भी अलग–अलग विषयों पर गाया जाता है। प्रोफेसर भैरूमल महरचन्द लिखते है कि 'सखर' और 'शिकारपुर' जिले (सिन्ध) में गाने और वाद्य यंत्रों को बजाने में निपुण लोग रहते थे।

ढोलक और भैरू नगाड़ाः– प्राचीन लोग युद्ध और शान्ति के समय ढोलक और भैरू नगाड़ा बजाते थे जिसे दुनदम्भी

(Dundumbhi) कहा जाता है। (मंडल पहला 28, 5 और 6) एक दूसरा वाद्य मुरली की तरह था जिसे करकरी (Karkari) कहते थे। (मंडल दूसरा 35, 13) वीणा भी बजाते थे। प्रोफेसर मैकडोनल कीथ ने बताया है कि नृत्य के समय कंजूं (मंजीरा) बजाये जाते थे जिसे ''आघाटियूं'' कहा जाता था।

वीणाः– वीणा का निर्माण भी हो चुका था जिसमें से अलग–अलग सुरों (रागों) के स्वर निकलते थे।

***पूर्व सह–आचार्य**
राजकीय महाविद्यालय
अजमेर (राज.)

1. भारत के सिन्धी गेय प्रेमाख्यान– डॉ. किशनी फुलवानी 2003 अजमेर
2. A.N. Macdonel (मैकडोनल) हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पृ0 305